" मानव जीवन - शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन हेतु राजयोग की उपयोगिता : चेतना की उत्कृष्टता के संदर्भ में एक व्यावहारिक विश्लेषण "

मेधावी शुक्ला* (अनुसंधान अध्येता)

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग ,महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

सारांश (सार - संक्षेप) *:" प्रस्तुत शोध आलेख में मानव जीवन शैली के उन अति सूक्ष्म पक्षों की विवेचना की गयी है जो नित - नूतन परिवेश में व्यावहारिकता की कसौटी पर पूर्णतया खरी उतरती हैं।स्वयं की गतिशीलता के मध्य जीवन की समालोचनात्मक व्याख्या करने का नैतिक साहस आख़िर कैसे जुटाया जाएऔर गुणात्मक परिवर्त्तन के उपाय को विचार एवं भाव के स्तर पर निजता के लिए नियम - संयम के रूप में किस प्रकार लाया जाए ? इस व्यवहार को आत्म - सात कर लेने की सहज विधि को विस्तार से व्यक्त किया गया है ।एक संवेदनशील मनुष्य का जीवन हम व्यतीत कर सकें , इस श्रेष्ठ मनोभाव की प्राप्ति हो जाए और गर्व से कह सकें कि " बड़े भाग्य मानुष तन पावा ...." यह शुभ भाव स्वयं के जीवन में स्थापित करने के लिए बुद्धि एवं हृदय से अनेकानेक प्रयास करने के पश्चात् भी उस ऊँचाई तक नहीं पहुँचने का पश्चाताप और इस कटु सत्य से उबरने तथा परिवर्तन करने के उपायों पर भी इस शोध आलेख में चर्चा की गयी है जिससे व्यक्ति जीवन की व्यथा एवं गहरे संताप से मुक्त हो सके ।जीवन के उजले स्वरुप की प्राप्ति हेतु सामान्यत: सभी व्यक्ति स्थूलता एवं सूक्ष्मता से विभिन्न स्थितियों को ठीक करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन मानव जीवन शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन के स्थायित्व को ग्रहण नहीं कर पाते हैं । इन विरोधाभासी स्थितियों से बाहर निकलकर चेतना की उत्कृष्टता के संदर्भ में व्यावहारिक विश्लेषण इस शोध आलेख में किया गया है जिससे मानव को श्रेष्ठ जीवन - शैली के प्रति नैसर्गिक श्रद्धा उत्पन्न हो सके ।स्वयं को उच्चता के ' भाव जगत ' में बनाये रखने हेतु राजयोग की उपयोगिता को इस प्रकार से स्पष्ट किया गया है कि व्यक्तिगत जीवन - बंधन एवं संबंध की वास्तविकता को लौकिक और अलोकिक स्वरुप से समझते हुए व्यवहार निभाया जा सके तथा कर्म - बंधनएवं संबंध से जुड़े हिसाब - किताब के मानसिक दबाव से मुक्ति की व्यावहारिक स्थिति निर्मित्त होजाए ।अतः आत्मिक परिदृश में चेतना की उत्कृष्टता की व्यावहारिकता उस समय उपयोगी बन जाती है जब चेतना एवं चिंतन का परिष्कृत रूप 'अनहद - नाद की निरंतरता ' को प्राप्त कर अहिंसक जीवन - शैली को गौरवान्वित कर देता है जो इस लोक में श्रेष्ठ मानव जीवन के रूप में सदा के लिए पूजनीय बन , समाज के लिए अनुकरणीय हो जाता है। "*

मेधावी शुक्ला ; मानद निर्देशक (प्रशिक्षण एवं मानव विकास)आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन एवं शैक्षणिक प्रशिक्षण केंद्र ,(देवास) मध्य प्रदेश । [Honorary Director (Training & Human Development) Spiritual Research Study And Educational Training Centre (SRSETC)Dewas, M.P]

मानव धर्म के प्रति चेतना की उत्कृष्टता:

जीव जगत के मध्य मानवता का बोध होना और स्वयं को मानव धर्म के प्रति निष्ठावान बनाना चेतना की उच्चता का प्रमाण होता है। मनुष्य की उत्पत्ति से जुड़े पक्ष स्वयं को भाग्यशाली स्वरुप में स्वीकार करते हैं तथा मनुष्यता को बनाये रखने की स्थिति में सफ़लता प्राप्त कर लेने पर सौभाग्यशाली होने का गौरव महसूस करना ' मानव धर्म ' का विशिष्ट लक्षण होता है। जीवन की विविधता में 'मानव धर्म का निर्वहन ' गुणात्मकता के साथ संपन्न कर लेना ' चेतना की चेतनता ' का सम्मान है जो राजयोग की उपयोगिता को स्वीकार करके आत्मा को गुण एवं शक्ति संपन्न बनाने के प्रति निरंतर आस्थावान रहती है। यदि मानव का सृष्टि पर आगमन हुआ है तो केवल वह स्थूलता के संपर्क , संसर्ग एवं संबंध तक सीमित रह जाए यह स्थित्ति मानवीय गरिमा के अनुकूल नहीं है बल्कि चेतना द्वारा सूक्ष्मता का परिदृश्य मुखर होना आवश्यक होता है जिसमें मन , बुद्धि एवं संस्कार का सकारात्मक परिवर्तन महत्वपूर्ण स्थित्ति होती है

।स्वधर्म की पक्षधरता मानव की रक्षा हेतु मानवता के कर्त्तव्य को सिद्धांत एवं व्यवहार की कसौटी पर खरा उतरने के लिए बल प्रदान करती है जिससे मानव धर्म के प्रति चेतना की उत्कृष्टता बनी रहे। मानव जीवन - शैली की गतिशीलता में कहाँ और किस प्रकार की स्थिति मनुष्य जीवन के भीतर मानसिक पीड़ा को जन्म दे देती है तथा व्यक्तिगत जीवन दु:खदायी बन जाता है जो सामाजिक स्तर पर भी अन्तर्द्वन्द ही प्रकट करता है। गुणात्मक जीवन - शैली के वास्तविक पर्याय समाधान की प्रवृत्ति की ओर अभिमुखित करते हुए मानव को प्राय : आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता के रहस्य का मानव धर्म के संबंध में स्पष्टीकरण प्रदान करते हैं। जीवात्मा के द्वारा पूर्णरूपेण राजयोग से सहसंबंध स्थापित कर लेना चेतना की उत्कृष्टता का परिणाम है जो मानव धर्म के प्रति आस्था से ज़िम्मेदारी का निर्वहन करने में निपुण होता है और अन्तत: मानव जीवन - शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन के बीज को राजयोग के माध्यम से रोपित करने में वृहद उपलब्धि का भागीदार बन जाता है।

मानव की रक्षा हेतु मानवता का धर्म :

सम्पूर्ण जीवन काल में मानवता का पाठ पढ़ने और एक दूसरे मनुष्य के साथ उदारता एवं सम्मान का व्यवहार करने के अनेकानेक उदाहरण से अवगत होने के पश्चात् भी शारीरिक तथा मानसिक स्तर पर सदा व्यवहारगत स्वरुप की ऊँचाई के साथ ‘ मानव की रक्षा का कर्तव्य ’ एक यक्ष प्रश्न की भांति व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्थितियों के लिए अनसुलझी पहेली ही क्यों बना हुआ है ? जब एक व्यक्ति आपसी व्यवहार में दूसरे व्यक्ति की अपेक्षाओं पर निरंतर कुठाराघात ही करता रहेगा और अपने लिए सुखद परिणाम की बाट जोहने में जुटा रहेगा तो कैसे और कब वह व्यक्तिगत सुख देने की स्थिति में स्वयं को सक्षम बना सकेगा ? यह विचारणीय पक्ष व्यक्ति की दयनीयता का घोतक है जो उसे बार – बार इस बात के लिए बाध्य करता है कि पहले दूसरा व्यक्ति अच्छा व्यवहार करे तब मैं अपनी निजता की पूंजी से अच्छाई एवं सच्चाई से युक्त व्यवहार प्रस्तुत कर सकूँगा इस मानसिकता की बीमारी से ग्रस्त मानव के लिए कौन मनुष्य ज़िम्मेदार है और कौन कर्त्तव्य हेतु उत्तरदायी है ?जीवन के स्वधर्म से उत्पन्न स्थित्ति का मूल्यांकन संतुष्टि पूर्ण तरीके से करने पर पता चलता है कि व्यक्ति ‘ मानव धर्म ’ की ओर किस स्तर पर प्रवृत्त हो सका है तथा इस भाव एवं व्यवहार जगत में गतिशील रहते हुए ‘ राष्ट्र धर्म ’ निभाने की चेष्टाएं क्या मौलिक अधिकार और कर्तव्य के मध्य एक संतुलन स्थापित कर सकेंगी ?मानव की रक्षा हेतु मानवता से युक्त व्यवहार ही भेद -दृष्टि से मुक्ति प्रदान कर व्यक्ति की मदद करने में उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं। सामान्य जीवन के अंतर्गत समदृष्टि का विकसित हो जाना मानव जीवन - शैली में गुणात्मक परिवर्तन का आधार होता है जो मानवता के कर्तव्य बोध को व्यवहार में परिवर्तित कर देता है। ज्ञान के व्यापक परिप्रेक्ष्य की जीवन्तता को शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता वर्तमान सन्दर्भ में ‘ राजयोग को प्रासंगिक ’ बनाती है जिसके माध्यम से ज्ञान , गुण एवं शक्ति की सम्पन्नता को ‘ मानवता ’ की व्यापकता से सम्बद्ध करके मानव समाज की रक्षा के दायित्व को पूर्ण किया जा सकता है।

गुणात्मक जीवन - शैली के वास्तविक पर्याय :

स्वयं के विकास अनुक्रम में जीवन के विविध पक्षों पर कार्य करना और इस सत्य का परीक्षण करने के लिए सदैव तत्पर रहना कि आख़िर मानव की गतिशीलता में गुणात्मकता की स्थिति को कैसे स्वीकार किया जा सकता है ? परिवर्तन की प्रकृति को निजता के विरोधाभास स्वरुप में मानकर अस्वीकार के देने की प्रवृत्ति को बदलना आवश्यक है तभी गुणात्मक जीवन के प्रति मन : स्थिति में श्रद्धा का विकास सुनिश्चित हो सकता है। मानव जीवन शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन के विभिन्न आयाम यह बतातें हैं कि एक श्रेष्ठ विचार को अपनाने के पश्चात् हमारे मस्तिष्क में कई महत्वपूर्ण विचार होते हैं जिन्हें पुन: स्मृति पटल पर अंकित करने की कोशिश एक नवीन विचार के प्रति ‘ विशिष्ट अनुग्रह ’ उत्पन्न कर देती है जो गुणात्मक जीवन शैली के वास्तविक पर्याय का व्यावहारिक उदाहरण होता है ।सामाजिक परिवेश में मानवीय शक्तियों की वृहद् उपयोगिता के विभिन्न परिदृश्य गुणात्मक जीवन - शैली के लिए कार्यरत भी रहते हैं तथा एक उच्च कोटि के विकल्प स्वरुप भावनात्मक एवं विचारगत स्थिति और अवस्था हेतु उनकी

तत्परता भी बनी रहती है ।जीवन में गुणात्मक परिवर्तन के लिए राजयोग की उपयोगिता चेतना की उत्कृष्टता को जन्म देती है जो मानवीय चिंतन को जीवन जीने की लालसा तक सीमित नहीं रखती बल्कि सम्पूर्णता के अनेकानेक आयाम से जोड़ने का कार्य भी करती है । मानव का आतंरिक विकास सदा गतिशीलता की स्थिति में कार्यरत रहता है जिसमें व्यावहारिकता की कसौटी पर ‘पश्चाताप और परिवर्तन’ की स्थितियां कार्य करती हैं जो मानवीय स्वभाव का अभिन्न अंग होती हैं ।जीवन में सभी कुछ अच्छा और बहुत अच्छा हो जाए इस तथ्य के गुणात्मक पक्ष ही अहिंसक जीवन - शैली निर्मित करने के प्रमुख कारक बनकर व्यक्तिगत स्तर एवं व्यक्तित्व गठन की प्रक्रिया को तय करते हैं । किसी भी देश काल एवं परिस्थिति के भीतर मानव की ‘ प्रवृत्तिगत गुणात्मक जीवन - शैली स्वयं को विकसित करने के संदर्भ में कार्यरत रहती है जिसे वह आत्म - निष्ठा के प्रसंग में स्वयं को संतुष्ट करने हेतु अपने इर्द - गिर्द की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता के मध्य ‘दैहिक , दैविक एवं भौतिक तपिश ’ में से उबरने का प्रयास करता रहता है ।

आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता :

मानव जीवन - शैली में गुणात्मक परिवर्तन को स्थापित करने के लिए राजयोग की उपयोगिता पर विचार - विमर्श करते हुए चेतना की उत्कृष्टता का संज्ञान प्राप्त कर आत्मिक स्वरुप को व्यावहारिक रूप में अपनाना स्वयं की गुणवत्ता का सुखद परिणाम है । एक जीवात्मा होने के नाते धर्म - कर्म के सिद्धांत से जुड़कर उसके प्रति अनुराग से ओत - प्रोत होकर जीवन पद्धतियों में परिवर्तन करने की इच्छा शक्ति आत्मिक उत्थान का महत्वपूर्ण कारक है । सामान्य दृष्टिकोण का विशिष्ट दृष्टिकोंण में बदलाव मनुष्य के लिए आत्मिक गौरव की सुखद परिणिति होती है जो व्यक्ति को ‘ अध्यात्म - पुरुषार्थ ’ की ओर गतिशील हो जाने के लिए प्रेरित करती है और स्वयं को उन्नति के शिखर पर स्थापित करना बुद्धिमत्ता के स्तर पर सुनिश्चित हो जाता है ।यदि आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता को आत्मसात करने का भाव - जगत अपनी विराटता के स्वरुप को अभिव्यक्त करता है तो संवेदनशील मानव के समीप ‘ राजयोग - मौन ’ के अतिरिक्त शेष कोई विकल्प नहीं बचता है क्योंकि यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आत्मा अपने वास्तविक स्वरुप में स्थित होकर ईश्वरीय सत्ता से संबंध स्थापित करती है । आत्मिक अनुभूतियां और राजयोग की व्यावहारिकता ने सामाजिक स्थित्ति के साथ मनोवैज्ञानिक रूप से भी यह सिद्ध कर दिया है कि जीवन के दार्शनिक बोध के स्वरुप में ढल जाने से व्यक्तिगत स्तर पर होने वाले रोग एवं शोक का मानसिक दबाव लगभग समाप्त हो जाता है ।स्वयं के जीवन का निमित्त भाव निजता के सन्दर्भ एवं प्रसंग की व्याख्या इस तरह से परिवर्तित कर देता है कि व्यक्तित्व में निर्मलता का भाव पक्ष सहजता से निर्माण चित्त की उच्च स्थिति को हृदयंगम करके आनंद की विशालता में स्थानांतरित हो जाता है । आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता का प्रतिपादन उस अवस्था में उपयोगी बन जाता है जब व्यक्ति के जीवन बंधन से जुड़े - लाभ - हानि , जीवन - मरण , यश - अपयश , के उच्चावचन में भी आत्मा की स्थित्ति ‘ एक - रस ’ अर्थात् ‘ सम - भाव ’ से युक्त रहती है जो मानव जीवन - शैली की गुणात्मकता का जीवंत उदाहरण है ।

जीवात्मा का राजयोग से संबंध :

जीवन के वास्तविक अर्थ एवं मान्य अनर्थ के मध्य का झंझावात व्यक्ति को टूटने तथा विवशता पूर्ण स्थितियों के लिए बाध्य करता है जबकि एक आत्मा का राजयोग से संबंध स्वयं को समर्थवान के रूप में गढ़ देता है । सम्पूर्ण अहिंसक जीवन की कल्पना का साकार एवं अव्यक्त स्वरुप इतना उच्च होता है कि जीवात्मा पूर्णतया ‘ मन - वचन - कर्म ’ की पवित्रता के साथ , ‘ समय - संकल्प - संबंध एवं स्वप्न ’ के पवित्रतम भाव को आत्मसात कर लेती है । यदि मानव धर्म के प्रति नैसर्गिक स्वभाव की निष्ठा का पक्ष जुड़ जाए तो चेतना की उत्कृष्टता को मानव की रक्षा का पाठ और मानवता के कर्तव्यबोध से सम्बद्ध जिम्मेदारियां स्वमेव ही पूर्ण हो जाएँगी । गुणात्मक जीवन - शैली के मूलभूत पर्याय की ख़ोज करने पर पता चलता है कि व्यक्ति के पास राजयोग के

अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है क्योंकि मानव अपने जीवन काल में स्थूलता की उत्पत्ति में हर्ष एवं इस भौतिकता की समाप्ति में विषाद को प्रकट करके स्वयं के होने अथवा नहीं होने के गौरव एवं अस्तित्व की उपस्थिति को जाने या अनजाने भाव से प्रकट करता है ।स्वयं के जीवन काल में आत्मिक स्वरुप के अंतर्गत स्थित्त होकर राजयोग का व्यावहारिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि निराकारी अवस्था के निर्मित्त हो जाने से जीवन की बोझिलता से मुक्त होकर आत्मा को शक्तिशाली बनाना सहज हो जाता है । मानव जीवन - शैली की उपादेयता एक वृहद दृष्टिकोंण को विकसित करने में मददगार होती है लेकिन व्यक्ति एवं वस्तुवाद का दबाव मनुष्य की सुख शांति को छिन्न -भिन्न कर देता है । व्यवहार के स्तर पर अहिंसक जीवन - शैली को अपनाते हुए गुणात्मक परिवर्त्तन की आवश्यकता के लिए बौद्धिक एवं भावनात्मक प्रयास किया जाना मानव की स्वभावगत विशेषता होती है। मानव जीवन - शैली को अत्यधिक कुशलता के साथ अपनाते हुए गुण मूलक प्रवृतियों की सहज गतिशीलता का सूक्ष्म परिवेश प्राप्त हो जाना ‘ जीवात्मा द्वारा राजयोग से संबंध ’स्थापित करने से सुनिश्चित हो जाता है। इस प्रकार जीवन में कर्म - बंधन एवं संबंध का लौकिक और अलौकिक स्वरुप प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कार्य नहीं करता बल्कि पारलौकिक शक्ति का सानिध्य गुण संपन्न रूप से मनुष्य आत्मा को श्रेष्ठ जीवन - शैली के लिए शक्तिशाली बना देता है ।

उपसंहार :

“ चेतना की उत्कृष्टता से जुड़े संदर्भित पक्ष की विराटता उनके व्यावहारिक स्वरुप के विश्लेषण को मानव जीवन - शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन की प्रासंगिक पृष्ठभूमि से रेखांकित करती है जिसमें राजयोग की उपयोगिता समाहित रहती है ।आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए सिद्धांत की पुष्टि को सुनिश्चित किया गया है जिसमें जीवन की भौतिकता के बंधन से व्यक्ति मुक्त हो जाता है तथा धीरे - धीरे जीवन के अभौतिक संबंध से उपराम होकर अत्यधिक सहजता से पराभौतिक भासना की पवित्र अनुभूतियों के आभामंडल को जीवात्मा द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है । मानव जीवन - शैली में पारलौकिक भासना की दिव्यता से आत्म जगत का गुण एवं शक्ति संपन्न बन जाना सुनिश्चित हो जाता है जो आत्मा के लिए गुणात्मक परिवर्तन का आधार स्तम्भ होता है जिससे पवित्र भाव का अभिव्यक्त स्वरुप राजयोग की उपयोगिता को सिद्ध कर देता है । व्यक्तिगत ‘ जीवन - दर्शन ’ में विचार पक्ष का बलशाली होना स्वाभाविक प्रक्रिया है लेकिन ‘ आत्म - दर्शन ’ की स्थित्ति में आत्म -अध्ययन से सम्बंधित चिंतन पक्ष चेतना की उत्कृष्टता के लिए निरंतर कार्य करते हैं।श्रेष्ठ जीवन - शैली की व्यापकता चेतना के सम्पूर्ण स्वरुप के परिष्कार को जन्म देने में सिद्धहस्त होती है यह जीवन का व्यवहार पक्ष अव्यक्त स्वरुप से ‘ परमात्म दर्शन ’ के माध्यम सेप्रकट होता है जिसे सूक्ष्म भासना से अनुभव किया जाना सहज होता है ।चेतना की उत्कृष्टता के द्वारा मानव धर्म के प्रति स्वयं के कर्मगत स्वरुप को सुसंस्कृत करते हुए मानवता की रक्षा का कार्य पूर्ण किया जा सकता है।सामाजिक स्तर से लेकर मनोवैज्ञानिक स्तर तक गुणात्मक परिवर्त्तन की आवश्यकता मानव जीवन - शैली में होती है और मनुष्य स्वयं की स्थित्तियों का आंकलन करके जीवन के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक परिवेश के अनुसार भी श्रेष्ठ जीवन - शैली के लिए पुरुषार्थ करता रहता है ।अतः जीवात्मा का राजयोग से एकाकार हो जाना इस बात का प्रमाण होता है कि आत्मिक परिदृश्य के द्वारा राजयोग की महत्ता को स्वीकृत्ति प्राप्त हो गयी है तथा चेतना की इस उत्कृष्टता को सम्पूर्ण गुणात्मकता के साथ मानव - जीवन शैली की श्रेष्ठता के व्यावहारिक स्वरुप में सहजता से अनुभव किया जा सकता है । ”

संदर्भ ग्रंथ सूची :

I. हिगुची , ताकियो (2005) विचारों को सक्रिय बनाए , Ideas in Action (जापान में आईडिया मैरेथान सिस्टम (आई ऍम एस) के मौलिक प्रस्तुतकर्त्ता) , Adarsh Interprizes , New Delhi - 02

II. गोयन्दका , जयदयाल (1923) ‘ आध्यात्मिक प्रवचन ’ , चौदहवां पुनमुद्रण , गीता प्रेस , गोरखपुर (गोविन्द भवन - कार्यालय , कोलकाता का संस्थान) - 273005

III. विदेहत्मानंद , स्वामी (2002) स्वामी विवेकानंद और उनका अवदान , अद्वैत आश्रम (प्रकाशन विभाग) 5 , डीही एटाली रोड कोलकाता – 400014

IV. कारनेगी , डेल (2003) लोक व्यवहार ‘ प्रभावशाली व्यक्तित्व की कला ’ मंजुल पब्लिशिंग हाउस , अनुवाद : डॉ सुधीर दीक्षित , 7 /32, अंसारी रोड , दरियागंज , नई दिल्ली – 110002

V. प्रसाद, भ. (1980) *मनीषी की लोकयात्रा.* वाराणसी**:** *महामहोपाध्याय पंडित (गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)* प्रकाशक – विश्वविद्यालय।

VI. भावे , संत विनोवा. (1978) *गीता प्रवचन,* वाराणसी: *प्रकाशन - सर्व सेवा संघ,* राजघाट , संस्करण - 30, मार्च।

VII. लॉक , जॉन (1981) ‘ *मानव बोध ’ ,* जयपुर : हिन्दी ग्रंथ अकादमी , प्रथम संस्करण ।

VIII. वैकटरामैया **,** मु. *(1998) श्री रमण महर्षि से बातचीत*. आगरा: प्रकाशक शिव लाल एड अग्रवाल कंपनी **,** आगरा।

IX. शर्मा , पंडित श्री राम (1998) *वाड्मय , साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान*, मथुरा: प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान. द्वितीय संस्करण।

X. शुक्ल , अजय : (2012)जीवन के सृजनात्मक पक्ष , प्रकाशक , मानवीय विकास संस्था , भोपाल , मध्य प्रदेश - 462016

XI. शर्मा, दिनेश चन्द्र : माह-जून (2017) ‘ परोपकारी ’पाक्षिक पत्रिका,प्रकाशन अवधि ; वर्ष-58 , परोपकारिणी सभा,दयानंद आश्रम , केसर गंज , अजमेर (राजस्थान) - **305001**

XII. भगेरिया , दामोदर : जुलाई - अगस्त (2013) ‘ गीता से जुडें ’ (आध्यात्मिक , द्विमासिक पत्रिका) 13, ऍम . जी .डी मार्केट , जयपुर - 02

XIII. सिंह , नामवर : जनवरी - मार्च (2013) ‘ आलोचना ’ त्रेमासिक पत्रिका , मैत्री शांति भवन , फ्लैट नं: - 4 , बी . ऍम . दास रोड , पटना (बिहार) - 800 004

XIV. शल्य , यशदेव एवं लाठ : मुकुंद : जुलाई (2015) उन्मीलन , मानसिक हिन्द स्वराज का वैतालिक दार्शनिक षड्मासिक , दर्शन प्रतिष्ठान , पी – 51, मधुबन पश्चिम , किसान मार्ग , जयपुर - 302015

XV. हबर्ड , एल . रॉन (2009) डायनेटिक्स मौलिक शोध - प्रबंध , NEW ERA PUBLICATIONS INTERNATIONAL APS, 2600 Glostrup Denmark .

Contributors Details :

मेधावी शुक्ला (अनुसंधान अध्येता)

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग ,महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

मो. - 9971613039;b.k.medhavi@gmail.com